मॉरीशस में गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा हिंदी शिक्षण

श्री यंतुदेव बुधु

मॉरीशस में कई ऐसी स्वैच्छिक संस्थाएँ हैं जो परतंत्र मॉरीशस के समय से हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करती आ रही है। इनमें हिंदी प्रचारिणी सभा, आर्य सभा, आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा के नाम विशेष उल्लेखनीय है। हिंदी के पठन-पाठन को बढ़ावा देने में हिंदी लेखक संघ, इंद्रधनुष सांस्कृतिक परिषद तथा हिंदी परिषद का भी योगदान रहा है। हिंदू महा सभा, तथा अन्य धार्मिक संस्थाएँ किसी न किसी रूप से हिंदी भाषा के माध्यम से धर्म प्रचार कर रही हैं। हिंदी संगठन भी हिंदी के प्रचार में काफ़ी कार्यरत है। और कई संस्थाएँ हैं जो क्षेत्रीय तौर पर हिंदीर स्कूल चलाती हैं – इनमें मॉरीशस हिंदी संस्थान तथा मॉरीशस एक्सटेंशन यूनिट के नाम भी मुखरित होते हैं।

2 नवंबर 1834 में भारतीय मज़दूरों के आगमन से ही मॉरीशस में हिंदी भाषा के इतिहास का श्रीगणेश हो जाता है। प्रारंभ में भारतीय मूल के लोग परस्पर भोजपुरी में बोलते थे। मॉरीशस में बैठक भारतीय गिरमिटिया मज़दूरों का एक केंद्र बनी। बैठकों ने भारतीय उत्सवों की परंपरा को बनाए रखा। लोग उन्हीं स्थानों में सामूहिक रूप से होली या दिवाली मनाते थे। इस प्रकार धार्मिक विचारों का प्रचार होता था। बैठकों में हिंदी सिखाई जाने लगी। अगर बैठका की स्थापना न हुई होती तो हिंदी भाषा का उचित प्रचार नहीं हो पाता।

वैसे प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल तो खुद एक संस्था स्वरूप उभर कर आए। हिंदी प्रचार तथा लेखन में उन्होंने व्यक्तिगत रूप से जो कार्य किया वह एक बड़ी हिंदी संस्था के कार्य से कम न था। धार्मिक और साहित्यिक दोनों क्षेत्रों में इन्होंने कमाल का काम किया। प्रो. विष्णुदयाल गाँव-गाँव तथा शहर-शहर धर्म प्रचार करते थे और उनके प्रचार का माध्यम हिंदी भाषा थी।

हिंदी और संस्कृति : मॉरीशस में जिन संस्थाओं में हिंदी की पढ़ाई होती है, प्रायः उन सभी जगहों में संस्कृत का भी पठन-पाठन होता है। संस्कृत देव-वाणी कहलाती है। यह दुनिया की सबसे पुरानी भाषाओं में से एक है। संस्कृत में हिंदू धर्म के लगभग सभी धर्मग्रंथ लिखे गए हैं। हिंदू धर्म में यज्ञ और पूजा संस्कृत में ही होती हैं। इसलिए इन ग्रंथों को पढ़ने-समझने के लिए संस्कृत का ज्ञान होना आवश्यक है। मात्र संस्कृत की परीक्षाएँ भारतीय विद्या भवन, मुंबई द्वारा संचालित तथा मॉरीशस के श्री सनातन धर्मीय ब्राह्मण महा सभा द्वरा आयोजित होती है। छात्र बालबोध से लेकर कोविद तक की परीक्षाओं में भाग लेते हैं।

इन परीक्षाओं का आयोजन 1962 से शुरू हुई थी। इनके आयोजन में स्वर्गीय प&डित दौलत रम शर्मा तथा पंडित जगदीश शर्मा का योगदान रहा है। आज हज़ारों की संख्या में लोग इन परीक्षाओं में भाग लेते हैं। यह बात उल्लेखनीय है कि कुछ वर्षों से हमारे पुरोहित लोग भी इन परीक्षाओं में भाग ले रहे हैं। संभवतः संगठन की स्थापना हो जाने पर संस्कृत भाषा के पठन-पाठन में और गति आ जाएगी। ऐसा हमारा विश्वास है।

मॉरीशस में हिंदी भाषा के प्रचा-प्रसार में हिंदी प्रचारिणी सभा का बहुत बड़ा योगदान रहा है। हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापना 12 जून 1926 में हुई थी। तब से अब तक सभा हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करती आ रही है। सभा का आदर्श वाक्य है – " भाषा गई तो संस्कृति गई"। सभा की स्थापना से अब तक कई कार्यकारिनी समितियाँ आईं और गईं पर हर समिति का एक ही उद्देश्य रहा – हिंदी भाषा का प्रचार करना। हिंदी प्रचारिणी सभा आज तक अपने पैरों पर खड़ी है। सभा के सदस्य आज तक सेवा-भाव से ही कार्य करते आ रहे हैं।

सभा की स्थापना का उद्देश्य था : पूरे मॉरीशस में निःशुल्क हिंदी भाषा पहुँचाना तथा भाषा के माध्यम से हिंदू संस्कृति की रक्षा करना। और भाषा एवं साहित्य का प्रचार करना।

1954 से मॉरीशस सरकार ने प्राथमिक स्कूलों में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था कर इस भाषा को औपचारिकता प्रदान की। पर स्वैच्छिक हिंदी भाषा का प्रचार-कार्य बराबर करती रही हैं। लगभग 300 गैर-सरकारी विद्यालयों में हिंदी की सायंकालीन एवं सप्ताहांत कक्षाएँ चलती रहीं जिनमें करीबन 500 अध्यापक कार्यरत हैं। आज सभी लोग यह स्वीकारते हैं कि 19 वीं सदी में भारतीय मज़दूरों ने गाँव-गाँव में बैठका बनाए जिनके द्वारा हिंदी शिक्षण का बीजारोपन हुआ था। इन बैठकाओं में हिंदी शिक्षण का प्रारंभ – 'राम गति देहूँ सुमति' से होता था और शिक्षक सेवा भावना से ही हिंदी पढ़ाते रहे। इस सेवा को मान्यता देते हुए मॉरीशस सरकार इन शिक्षकों को प्रतीकात्कम रूप में भत्ता दे रही है।

अर्थव्यवस्था : किसी भी कार्य को करने के लिए आर्थिक-व्यवस्था होनी चाहिए। हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापना के लिए स्वयं सेवियों तथा हिंदी सेवियों ने इस कार्य को बहुत खूबी से किया। सभा के कई दाता हुए जिनमें प्रमुख थे स्वर्गीय श्री रामदास रामलखन जोगिरधारी भगत से जाने जाते थे। उन्होंने हिंदी भाषा के नाम पर, भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अपनी सारी संपत्ति दान में दे दी और खुद तीर्थ-यात्रा के लिए भारत चले गए। इनसे प्रेरणा पाकर और लोगों ने पैसे तथा अपनी जमीनें सभा को दान में दीं। इस तरह आज तक सभा का कार्य सुचारु रूप से उन्हीं दाताओं की बदौलत होता आ रहा है।

सभा के भवन : हिंदी प्रचारिणी सभा के भवन में एक विद्यालय भी है जहाँ सप्ताहांत में हिंदी भाषा की पढ़ाई प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर होती है । यहाँ हिंदी के साथ-साथ संस्कृत भाषा की भी पढ़ाई होती है । सभा का एक विशाल सभागार है जहाँ पर सभा के उत्सवों, गोष्ठियों, प्रतियोगिताओं, कवी-सम्मेलनों तथा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है । सभा की चार और शाखाएँ हैं जो देश के विभिन्न क्षेत्रों में पाई जाती हैं जहाँ पर सायंकालीन तथा सप्ताहांत विद्यालयों में हिंदी भाषा का पठन-पाठन होता है । हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा 1926 में क्रेव केर ग्राम में एक कन्या पाठशाला खोली गई जहाँ लड़कियों की शिक्षा का प्रबंध किया गया । वहाँ पर लड़कियों के लिए पूरे दिन हिंदी की पढ़ाई की व्यवस्था की गई थी।

बैठका एवं परिक्षाएँ : सभा से पंजीकृत लगभग 175 सायंकालीन तथा सप्ताहांत स्कूल हैं जिनमें प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षाएँ चलती हैं। सभा की स्थापना के बाद से हिंदी की पढ़ाई को बढ़ावा देने

के लिए इन प्राथमिक स्कूलों का निरीक्षण, परीक्षण तथा पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरण सभा अपने खर्च पर कराती है । इन स्कूलों की छठी कक्षा की परीक्षा का राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन होता है और प्रोत्साहन हेतु छातत्रों को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरण के लिए वार्षिकोत्सवों का आयोजन होता है । उस अवसर पर छात्रों के अलावा अभिभावक तथा हिंदी के विद्वानों को भी आमंत्रित किया जाता है।

50 वर्ष से अधिक हो चुके हैं जब से हिंदी प्रचारिणी सभा भारत के इलाहाबाद शहर से हिंदी साहित्य सम्मेलन के सौजन्य से कक्षा परिचय से उत्तमा (साहित्य रत्न) तक की परीक्षाओं का आयोजन कराती है। यह कार्य स्वर्गीय श्री जयनारायण रॉय की कोशिश का नतीजा रहा है। ये परीक्षाएँ आज तक होती हैं। इन परीक्षाओं को हमारी सरकार की ओर से मान्यता प्राप्त है । उत्तमा (साहित्य रत्न) को डिप्लोमा इन हिंदी (Diploma in Hindi) का दर्जा प्राप्त है। प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं के बीच की कठिनाई को देखकर सभा ने छठी कक्षा और परिचय के बीच की खाई की पूर्ति के लिए एक स्थानीय परीक्षा (प्रवेशिका) का आयोजन शुरू किया जिसमें सफलता प्राप्त करने के बाद ही छात्र माध्यमिक कक्षा की ओर बढ़ाते हैं।

आयोजन : वर्ष भर में सभा तीन मुख्य उत्सवों का आयोजन करती है – जून महीने में स्थापना दिवस। इस अवसर पर एक साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन होता है । गोष्ठी के लिए एक साहित्यकार को चुना जाता है जिसपर हिंदी भवन विद्यालय के छात्र अपनी-अपनी तैयारी प्रस्तुत करते हैं । विद्यालय का एक छात्र ही इस गोष्ठी को प्रस्तुत करता है । इस मौके पर एक विद्वान को आमंत्रित किया जाता है जो की छात्रों को सुनाने के बाद अपना विचार प्रकट करता है तथा छात्रों का मार्गदर्शन भी करता है।

जुलाई-अगस्त महीने के लगभग तुलसी जयंती के उपलक्ष्य पर सभा हिंदी दिवस का आयोजन कराती है। पहली बार के लिए सभा ने 1965 में हिंदी दिवस का आयोजन किया था । तब से इसी अवसर पर हिंदी दिवस मनाने की एक परंपरा बन गई है । तुलसी जयंती के उपलक्ष्य पर ही इस दिवस का आयोजन क्यों? सभा इस बात को नकार नहीं सकती कि मॉरीशास देश में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस का बहुत बड़ा योगदान है । श्रीरामचरितमानस से धर्म प्रचार के साथ-साथ हिंदी भाषा का भी प्रचार होता रहा, भले ही उस ग्रंथ की भाषा अवधी है । हिंदी दिवस के अवसर पर छात्र श्रद्धा के साथ श्रीरामचरितमानस के दोहे एवं चौपाइयों गाते हैं। हिंदी दिवस के अवसर ही छात्रों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है।

समावर्तन समारोह दिसंबर महीने में मनाया जाता है । इस मौके पर उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरण के साथ-साथ देश के दो हिंदी सेवियों को, जिन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया हो, उन्हें “हिंदी प्रचारिणी सभा सम्मान” से विभूषित किया जाता है।

प्रतियोगिताएँ : लेखन को बढ़ावा देने के लिए सभा समय-समय पर अनेक लेखन-प्रतियोगिताओं का आयोजन करती है । इस के अलावा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा कविता-वाचन प्रतियोगिता का आयोजन अब वार्षिक होने लगा है । छात्र इस प्रतियोगिता में काफी दिलचस्पी दिखाते हैं और वे बड़ी संख्या में भाग लेते हैं।

कार्यशाला : सभा सायंकालीन तथा सपताहांत स्कूलों के शिक्षकों के लिए हर वर्ष कार्यशाला का आयोजन करती है। इस दौरान शिक्षकों को प्राथमिक पुस्तकों तथा शिक्षण विधि पर अधिक जानकारी डी जाती है। पाठ्यक्रम तथा परीक्षा से समबन्धित जानकारी के लिए उत्तमा (साहित्य रत्न) के छात्रों के लिए भी सभा वार्षिक कार्यशाला का आयोजन करती है। इससे छात्र लाभान्वित होते हैं।

प्रकाशन : यह तो सर्वविदित है कि साहित्य-सृजन बिना भाषा आगे नहीं बढ़ सकती । हिंदी प्रचारिणी सभा की स्थापन होते ही प्रकाशन का कार्य शुरू हो गया था । 1935 में ही सभा द्वारा हस्तलिखित 'दुर्गा' पत्रिका निकलती थी। आज भी सभा के पुस्तकालय में दो – तीन प्रतियाँ सुरक्षित हैं। इस हस्तलिखित पत्रिका की एक प्रति कुछ साल पहले दिल्ली की पुस्तक प्रदर्शनी में भी रखी गई थी।

इसके अलावा सभा ने कई तरह की पुस्तकों का प्रकाशन किया है । सभा द्वारा संचालित प्राथमिक स्कूलों के छात्रों के लिए 'सुगम हिंदी' पुस्तक माला I –VI तक का प्रकाशन हुआ है। स्थानीय साहित्यकारों को बढ़ावा देने के लिए प्रवेशिका कक्षा के पाठ्यक्रम में सभा ने स्थानीय लेखकों की कहानियाँ तथा स्थानीय कवियों की कविताएँ संकलित की हैं । छात्रों में पढ़ने की रुचि बढाने के लिए सभा 'पंकज' नाम की एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन करती है जिसमें स्थानीय साहित्यकारों की रचनाओं के अलावा विदेशी साहित्यकारों की रचनाएँ भी होती हैं । अब तक सभा ने पंकज के कई विशेषांक भी प्रकाशित किए हैं । सभा 'हिंदी भवन संदेश' का प्रकाशन भी करती है जिसमें सभा की गतिविधियों का ब्यौरा तथा सभा से संबंधित जानकारियाँ तथा सूचनाएँ सदस्यों को तथा स्कूल के सनाचालकों को भेजा जाता है।

उपलब्धियाँ : आज हिंदी प्रचारिणी सभा गर्व का अनुभव करती है क्योंकि 1926 में जो हिंदी ज्ञान गंगा की धारा सभा ने बहाई थी, वह गंगा-धारा पूरे मॉरीशास में बही । हम उसी हिंदी ज्ञान गंगा की उपज हैं। हमारे देश में अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर आदि जैसे विश्व विख्यात साहित्यकार पैदा हुए। असंख्य हिंदी के विद्वान पैदा हुए। सभी का किसी न किसी तरह से हिंदी प्रचारिणी सभा से संबंध रहा है।

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में संसार के माध्यमों का योगदान अद्वितीय है । कम्प्यूटर और इंटरनेट संचार का नविनतन साधन है । इंटरनेट ने हिंदी को एक नई दिशा दी है ।आज के युग में कम्प्यूटर और इंटरनेट की जानकारी के बिना शिक्षा अधूरी समझी जाती है । हिंदी प्रचारिणी सभा की एक वेब साईट है जहाँ सभा से संबंधित जानकारियाँ एवं सूचनाएँ उपलब्ध हैं जिनसे छात्र लाभ उठा रहे हैं। छात्र ई-मेल से भी संपर्क रखते हैं। कम्प्यूटर पर टंकन की सुविधा भी दी जा रही है। कम्प्यूटर को लेकर शिक्षण के क्षेत्र में काफी काम किए जा रहे हैं। छात्रों को शिक्षण की सामग्री ई-मेल द्वारा भी भेजी जाती है। छात्र इन सुविधाओं का पूरा-पूरा लाभ उठा रहे हैं । अतः आज हिंदी भाषा का प्रचार इस नए उपकरण से किया जा रहा है। मतलब हिंदी भाषा भी समय की माँग को लेकर साथ चल रही है।

नौकरी की संभावनाएँ : आज सच तो यह है परीकशाओ में हिंदी विषय को लेकर छात्रो की संख्या घटती जा रही है। इसका प्रथम कारण है आजीविका। छात्र अपने भविष्य में नौकरी की बा ध्यान में रखकर ही ऐसा सोचने पर मजबूर हो जाते हैं क्योंकि मॉरीशस में हिंदी के क्षेत्र में नौकरी की बहुत

काम संभावानाएँ हैं। इसलिए बहुत कम छात्र हिंदी में डिग्री कोर्स या उच्च शिक्षा की ओर बढ़ने में संकोच करते हैं।

अगर गैर-सरकारी संस्थाओं में, जैसे पर्यटन क्षेत्र में लोगों की भर्ती होने लगे तो जाने कितने लोगों को आजोविका प्राप्त हो सकती है। संचार तथा प्रकाशन के क्षेत्र में भी नौकरी की संभावानाएँ हो सकती हैं। मॉरीशस में हिंदी पुस्तकों के प्रकाशन की काम सुविधा है । ज्यादातर हिंदी की पुस्तकें भारत में ही प्रकाशित होती हैं । अगर प्रकाशन का कार्य यहाँ अधिक हो तो इस क्षेत्र में भी हिंदी को लेकर नौकरी की संभावनाएँ हो सकती हैं।

निष्कर्ष : हिंदी भाषा मॉरीशस में गिरमिटिया मजदूरों के साथ आई । उन मजदूरों ने इस भाषा को अपने पसीने से सींचा, आगे बढ़ाया, इसकी रक्षा की। अब हमारा फ़र्ज़ बनाता है कि हम हिंदी भाषा की मशाल को लेकर आगे चलें। इसकी रक्षा करना, आगे बढ़ाना हमारा कर्तव्य बनता है।

अध्यक्ष, हिंदी प्रचारिणी सभा
बंधु गली, मोर्सेलमाँ सेंट आंद्रे
ashvin2409@hotmail.com